ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-11*December- 2021
Innovation The Research Concept

# सीखने में अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन का महत्व

# Importance of Motivation and Encouragement in Learning

Paper Submission: 07/12/2021, Date of Acceptance: 18/12/2021, Date of Publication: 23/12/2021

**शकीला खान**
गेस्ट फैकल्टी,
शिक्षा संकाय विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, सागर,
म.प्र., भारत

## Abstract

प्रस्तुत लेख में सीखने में अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन के महत्व को बताया गया है कि किस प्रकार अन्य आकांक्षाएँ, स्पष्ट उद्देश्य तथा परिणामों व ज्ञान, विद्यार्थी की आत्म-प्रेरणा के लिए, प्रोत्साहन का कार्य करते हैं, इनसे आन्तरिक अभिप्रेरणा मिलती है, छात्र, शिक्षक के मार्गदर्शन में ही चारित्रिक विकास एवं आदर्श नागरिकता का विकास करना सीखते हैं। अभिप्रेरणा सीखने की प्रक्रिया का एक सशक्त माध्यम है अधिगम प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति जीवन के सामाजिक, प्राकृतिक एवं वैयक्तिक क्षेत्र में अभिप्रेरणा द्वारा ही सफलता की सीढ़ी तक पहुँच पाता है यदि उसके लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण नहीं हो पाता तो अभिप्रेरणा का उत्पन्न होना सन्देहप्रद रह जाता है सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की भूमिका का अध्ययन अतिआवश्यक है। अभिप्रेरणा एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को अन्दर से किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है मानव की कई जैविक एवं सामाजिक आवश्यकताऐं होती है इन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए वह क्रपअम होता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और उसकी आवश्यकता पूर्ण होती है। तनाव खत्म हो जाता है मानव को आगे बढ़ने के लिए सकारात्मक प्रोत्साहन मिलता जाता है वह सीखता चला जाता है। व्यक्ति की प्रेरणा व्यक्ति को शक्ति प्रदान करती है उसके व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है, उसके व्यवहार को चयनात्मक बनाती है। एक शिक्षक को बालक को प्रेरित करने के लिए सीखने का उद्देश्य, प्रगति एवं परिणाम का ज्ञान, प्रशंसा एवं निंदा का समय-समय प्रयोग करना चाहिए साथ ही प्रतियोगिता का आयोजन, व्यावहारिक लक्ष्य का भी ध्यान रखना चाहिए। जो शिक्षा के दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण भी है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि के लिए अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन का महत्वपूर्ण स्थान है।

In the present article, the importance of motivation and encouragement in learning has been told, how other aspirations, clear objectives and results and knowledge act as incentives for self-motivation of the student, it gives internal motivation, student, teacher We learn to develop character development and ideal citizenship under the guidance of Motivation is a powerful medium of learning process, through the learning process, a person reaches the ladder of success in the social, natural and personal sphere of life only through motivation, if suitable conditions are not created for him, then the origin of motivation remains doubtful. It is important to study the role of motivation in the learning process. Motivation is such a power that motivates a person to do some work from within, human has many biological and social needs, to fulfill these needs, he is ready and achieves his goal and his need. is completed. The stress disappears, a person gets positive encouragement to move forward, he goes on learning. Motivation of the person gives strength to the person, gives a certain direction to his behavior, makes his behavior selective. To motivate the child, a teacher should use the purpose of learning, knowledge of progress and results, praise and condemnation from time to time, as well as organize competition, should also keep in mind the practical goal. Which is also more important from the point of view of education. Motivation and encouragement have an important place for the academic achievement of the child.

**मुख्य शब्दः** अभिप्रेरणा, प्रोत्साहन, अभिप्रेरक, अभिप्रेरण चक्र, आवश्यकता, अन्तर्नोद, लक्ष्य, सकारात्मक एवं नकारात्मक अभिप्रेरणा एवं विधियाँ।

**Keywords:** Motivation, Motivation, Motivation, Motivation Cycle, Need, Drive, Goals, Positive and Negative Motivation and Methods.

**प्रस्तावना**

शिक्षक के सामने अक्सर यह प्रश्न आता है कि मैं बच्चों को कैसे अभिप्रेरित करूं। मोटीवेशन कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे शिक्षक जब चाहे बच्चों में पैदा कर दें जब चाहें तब उसे समाप्त कर दें। कहने का तात्पर्य यह है कि अभिप्रेरणा कोई ऐसी बाहरी चीज नहीं है जो शिक्षक की स्वेच्छा से उत्पन्न होता है या खत्म होता है।

रिली एवं लेविस (Reilly - स्मूपे, 1983) के अनुसार अभिप्रेरणा एक ऐसा बल (Force) है जो व्यक्ति के भीतर से उत्पन्न होता है।

यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी की आन्तरिक शक्ति वातावरण के विभिन्न लक्ष्य वस्तुओं की ओर निर्देशित होती हैं हम देखते है कि एक छोटा सा पक्षी एक कोने में अपना घोंसला बनाने के लिए कुछ सामान इकट्ठा करता है। हम उसके सामान को बिखेर देते हैं परन्तु वह पक्षी फिर से पत्तों तिनकों आदि को इकट्ठा करने लगता है व घोंसला बनाने लग जाता है कौन सी चीज उसे इतना कठिन कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। इसी प्रकार विद्यार्थी परीक्षा के समय आधी-आधी रात तक परिश्रम करते हुए दिखते है, इसी प्रकार छोटे बच्चे चोट लगने के बाद भी लगातार साइकिल सीखते रहते हैं क्यों? इस क्यों का उत्तर एक शब्द मोटिवेशन में निहित है। जो कार्य करने के लिए उकसा रही है, बढ़ावा दे रही है, और वे उसी से वशीभूत होकर एक विशेष तरह का व्यवहार किये जा रहे हैं। जो शक्ति तत्व इस प्रकार के व्यवहार का संचालन करते हैं उन्हें मनोवैज्ञानिक भाषा में अभिप्रेरक की संज्ञा दी जाती है।व्यवहार को अभिप्रेरित करने वाले मूलभूत अभिप्रेरकों को सामान्य रूप से दो व्यापक वर्गों में बांटा जा सकता है-

1. प्राथमिक अभिप्रेरक या जैविक आवश्यकता (Primary Motives)
2. द्वितीयक अभिप्रेरक या सामाजिक आवश्यकता (Secondary Motives)

**अध्ययन का उद्देश्य**

इस लेख को प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि बालकों के जीवन में सीखने का क्या महत्व है। सीखने एवं सिखाने में एक शिक्षक किस प्रकार अभिप्रेरित कर बालक के जीवन को सफलता की ओर अग्रसर कर सकते हैं व बालक की आंतरिक शक्ति को सही दिशा प्रदान कर सकते हैं चूँकि बालक कच्ची मिट्टी से बने घड़े के समान होते है उनको जिस ढाँचे में डाला जायेगा वह ढल जायेंगे। प्रस्तुत लेख के उद्देश्य में यह समझने का प्रयास किया गया कि अभिप्रेरक और आवश्यकता मानव व्यवहार में किस प्रकार सक्रिय रहते है, अभिप्रेरक एवं आवश्यकता का उपयोग करके शैक्षिक अनुभवों को बालकों को इस प्रकार दिया जाना आवश्यक है ताकि वह व्यावसायिक जीवन को प्रोन्नत कर सके। शिक्षण का कार्य यह है कि वह बालकों को वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने की ओर प्रेरित करें और यह देखें कि इस प्रक्रिया द्वारा यह वांछित व्यवहार ग्रहण कर लें।

मानव, ज्ञान तथा कला में वृद्धि चाहता है वह यह भी जानता है कि समाज में वह अच्छा जीवन उसी समय व्यतीत कर सकता है जब वह नैतिक आदर्शों और मूल्यों को विकसित करें। ज्ञान, कौशल, आदर्श, मूल्य सब वह सीखता है। यह सीखना उसी समय सफल होता है जब इस स्तर पर सीखने की प्रेरणा स्वयं उसे अपने आत्म से मिले।

**प्राथमिक अभिप्रेरक**

इनका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति की प्राथमिक मूलभूत आवश्यकताओं से होता है जिनकी सन्तुष्टि से उसके जीवन की बागडोर बंधी रहती है। व्यक्ति में इनकी उपस्थिति जन्मजात होती है।

1. भूख अभिप्रेरक (Hunger Motive )
2. प्यास अभिप्रेरक (Thirst Motive)
3. काम अभिप्रेरक (Sex Motive)
4. नींद व विश्राम अभिप्रेरक (Sleep and Rest Motive)

ये सभी अभिप्रेरक हमारे व्यवहारों को इस ढंग से अभिप्रेरित करते हैं ताकि हमारी शारीरिक व जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे।

**द्वितीयक प्रेरक**

इनका अस्तित्व जन्म से नहीं होता बल्कि अर्जित किया जाता है वास्तव में देखा जाये तो इनका जन्म हमारी सामाजिक मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ही होता है। ऐसे अभिप्रेरक हमारे जीवन में गति लाते हैं और सामाजिक व सुन्दर बनाते हैं जैसे-

उपलब्धि अभिप्रेरक (Achievements Motive)
शक्ति अभिप्रेरक (Power Motive)
संरक्षण अभिप्रेरक (Security Motive)
आत्मभिव्यक्ति अभिप्रेरक (Self Actualçation Motive)
स्नेह-अभिप्रेरक (affection Motive)
सम्बन्धित रहने सम्बधी अभिरेक (affection Motive) आदि।

व्यक्ति के व्यवहार से जब इनमें से किसी भी प्रकार का प्रायमरी सेकेण्डरी अभिप्रेरक जुड़ जाता है तो उसका व्यवहार अभिप्रेरित या अभिप्रेरणात्मक व्यवहार बन जाता है।

"अभिप्रेरणात्मक व्यवहार से तात्पर्य किसी बुनियादी अभिप्रेरक से संचालित ऐसे प्रचलित, चयनित एवं लक्ष्य निर्देशित व्यवहार से होता है जिसका उद्देश्य व्यक्ति का मूल आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में सहायक बनकर वातावरण के सन्दर्भ में उसके सन्तुलन और समायोजन को बनाये रखना होता है।"

**अभिप्रेरणा चक्र**

मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणात्मक चक्र के तीन प्रमुख क्रमिक कदम बताए हैं-

1. आवश्यकता
2. अन्तर्नोद
3. प्रोत्साहन या लक्ष्य

**आवश्यकता** किसी चीज की कमी की अवस्था को आवश्यकता की संज्ञा देते है मनोवैज्ञानिक में आवश्यकता के अभिप्रेरण की उत्पत्ति में पहला कदम बताया है क्योंकि अभिप्रेरण चक्र में पहले आवश्यकता ही उत्पन्न होती है।प्रकार की आवश्यकता व्यक्ति में होती है।

**जैविक आवश्यकता** भूख, प्यास, निद्रा, काम, मलमूत्र त्याग।

**सामाजिक आवश्यकता** उपलब्धि प्राप्त करने की आवश्यकता दूसरों पर आधिपत्य जमाने की आवश्यकता, धन कमाने की आवश्यकता, दूसरों से सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता आदि कुछ सामाजिक आवश्यकता के उदाहरण हैं।

**अन्तर्नोद** जब व्यक्ति में किसी तरह की आवश्यकता उत्पन्न होती है तो उससे क्रियाशीलता बढ़ जाती है तथा वह पहले से अधिक सक्रिय एवं तनावग्रस्त हो जाता है इसे ही ड्राइव की संज्ञा दी गयी है जैसे भूख की आवश्यकता से व्यक्ति में भूख अन्तर्नोद तथा प्यास आवश्यकता से प्यास अन्तर्नोद उत्पन्न होता है।

**प्रोत्साहन या लक्ष्य** लक्ष्य या प्रोत्साहन वातावरण की वह वस्तु होती है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तथा जिसकी प्राप्ति से उसकी आवश्यकता की पूर्ति तथा ड्राइव में कमी हो जाती है जैसे भूखे व्यक्ति को भोजन की प्राप्ति से भूख की आवश्यकता समाप्त हो जाती है एवं क्रियाशीलता व तनाव की स्थिति (अन्तर्नोद) भी कम हो जाती है। भोजन, लक्ष्य या प्रोत्साहन होता है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। प्रोत्साहन दो प्रकार के होते हैं-

**सकारात्मक प्रोत्साहन** ऐसे प्रोत्साहन होते है जिसे व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है क्योंकि उसे प्राप्त करने से उसकी आवश्यकता की पूर्ति होती है जैसे- भोजन, पानी।

**नकारात्मक प्रोत्साहन** ऐसे प्रोत्साहन होते है जिनसे व्यक्ति दूर रहना चाहता है क्योंकि इनसे दूर रहने से ही उसकी (व्यक्ति) आवश्यकता की पूर्ति होती है जैसे दण्ड, आलोचना। जिनमें दूर रहकर ही व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति सही अर्थ में कर सकता है।

**सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरण का अर्थ** कई अध्ययन से मालूम हुआ कि अभिप्रेरण सीखने की प्रक्रिया में तीन तरह के कार्य करते हैं-

**अभिप्रेरण व्यवहारों को शक्ति प्रदान करता है** अभिप्रेरण बालकों में शक्ति उत्पन्न करता है तथा उसे क्रियाशील बना देता है। Psychological motives and physical motives बालकों में इतनी शक्ति एवं क्रियाशीलता उत्पन्न कर देते हैं कि उससे किसी कार्य को करने या सीखने मंे काफी मदद मिलती है।

**अभिप्रेरण व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है** अभिप्रेरण बालकों के व्यवहार को लक्ष्य की ओर निर्देशित करता है। इससे फायदा यह होता है कि बालक को अपने अन्तिम लक्ष्य पर पहुँचने में सहायता मिलती है इस तरह अभिप्रेरित व्यवहार उद्देश्यपूर्ण एवं सतत होता है।
उदाहरण - जिस बालक में उपलब्धि अभिप्रेरक की प्रबलता होती है वह हमेशा अपना ध्यान बुक की ओर लगाएगा तथा कक्षा में शिक्षक की बातों पर अधिक ध्यान देता है।

**अभिप्रेरण में व्यवहार चयनात्मक हो जाता है** अभिप्रेरण बालकों के व्यवहार को सिर्फ दिशा निर्देश ही नहीं प्रदान करता है बल्कि उनके व्यवहार को सिलेक्टिव बना देता है यह बालकों को एक निश्चित व्यवहार का चयन करने में मदद करता है। बालक अपने लिए एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर सिर्फ उन्हीं व्यवहारों को करता है जिनसे उस लक्ष्य की प्राप्ति हो सके शायद यही कारण है कि एक अनियोजित छात्र का ध्यान, एक नियोजित छात्र के ध्यान की अपेक्षा पेपर के वेकेंसी वाले कॉलम में अधिक जाता है उसी तरह एक राजनीतिक का ध्यान राजनीति से संबंधित न्यूज पर अधिक जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अभिप्रेरण बालकों को सीखने के लिए एक उचित वातावरण तैयार करता है।

**आन्तरिक अभिप्रेरणा तथा बाह्य अभिप्रेरणा** बालकों द्वारा किसी पाठ को सीखने में आन्तरिक व बाह्य अभिप्रेरण का काफी महत्व है। शिक्षक को इन दोनों प्रकार के अभिप्रेरणों के बीच एक संतुलन बनाकर रखना चाहिए ताकि सीखने की प्रक्रिया तीव्रता से हो सके।

**आन्तरिक अभिप्रेरण**

इसका तात्पर्य स्वतः अभिरूचि से होता है जब सीखने वाला किसी पाठ को इसलिए सीखता है क्योंकि उसमें उसकी रूचि है व पाठ को सीखने में खुशी मिलती है यह सीखने वाले में आन्तरिक अभिप्रेरण है।

स्वार्टज् (schwartz 1977) ने आन्तरिक अभिप्रेरण को परिभाषित करते हुए कहा है- "आन्तरिक अभिप्रेरणा से तात्पर्य व्यक्ति के भीतर से उत्पन्न उस दबाव से होता है जो उसे एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।"

आन्तरिक अभिप्रेरण व्यक्ति को भीतर से प्रेरणा प्रदान करता है। चिंता, उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर, आन्तरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण है।

**बाह्य अभिप्रेरण**

बाह्य अभिप्रेरण से तात्पर्य ऐसे प्रोत्साहन से होता है जो शिक्षार्थी के बाहरी वातावरण में दिया जाता है तथा उसके व्यवहार को एक निश्चित दिशा में मोड़ा जाता है।

स्वार्टज् (schwartz 1977) के शब्दों में "बाह्य अभिप्रेरण वह प्रोत्साहन होता है जो व्यक्ति को बाहर से उस व्यक्ति द्वारा दिया जाता है जो एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है जब किसी विद्यार्थी को कोई पाठ सीखने के लिए 10 रुपये का पुरस्कार दिया जाता है या उसकी प्रशंसा की जाती है तो यहाँ 10 रुपये तथा प्रशंसा दोनों ही बाह्य अभिप्रेरण के उदाहरण होंगे।

कई शोध के बाद यह सामने आया है कि एक शिक्षक को आन्तरिक व बाह्य अभिप्रेरक दोनों पर सन्तुलित बल डालना चाहिए क्योंकि छात्रों में सीखने की प्रक्रिया में दोनों का संयुक्त हाथ होता है। किसी एक पर बल डालकर किसी भी शिक्षक को छात्रों को किसी विषय या पाठ को सिखाने में मात्र आंशिक सफलता ही मिल सकती है अतः शिक्षक को दोनों तरह के अभिप्रेरकों के विकास पर संतुलित बल डालना चाहिए।

**स्कूली शिक्षा में अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन का महत्व**

स्कूली शिक्षा में अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा को सीखने का राजकीय मार्ग कहा है। सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा के महत्व को दर्शाते हुए मेल्टन (1956) कहते हैं कि अभिप्रेरणा सीखने की एक आवश्यक शर्त है। एंडरसन (1944), सीखने की प्रक्रिया अच्छी तरह तभी होगी जबकि अभिप्रेरणा हो।

वैसे तो कई तरह के अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन है जिनसे सीखने की प्रक्रिया प्रभावित होती है परन्तु कुछ प्रमुख प्रकार है जिनका अध्ययन शिक्षक तथा मनोवैज्ञानिक ने सीखने के संदर्भ में अधिक किया जैसे-

1. सीखने का उद्देश्य
2. पुरस्कार एवं दण्ड
3. प्रगति तथा परिणाम का ज्ञान
4. प्रशंसा एवं निंदा
5. स्पर्धा, प्रतियोगिता तथा सहयोगिता
6. लक्ष्य निर्धारण व्यवहार या आकांक्षा स्तर
7. प्रोत्साहन के रूप में सामाजिक अनुमोदन
8. प्रोत्साहन के रूप में व्यावसायिक लक्ष्य

**अभिप्रेरणा के सिद्धान्त**

विद्यार्थी को अभिप्रेरणा प्रदान करने हेतु कुछ सिद्धान्त इस प्रकार हैं-

1. अधिगम हेतु तत्परता का सिद्धान्त
2. आवश्यकताओं और प्रेरकों से लाभ उठाने का सिद्धान्त
3. सक्रिय भागीदारी का सिद्धान्त
4. रूचि उत्पन्न करने और बनाये रखने का सिद्धान्त
5. ध्यान या अवधान को आकर्षित करने एवं बनाये रखने का सिद्धान्त
6. लक्ष्य एवं उद्देश्यों की निश्चितता एवं स्पष्टता का सिद्धान्त
7. अनुदेशन सामग्री के उचित संगठन का सिद्धान्त
8. उचित विधियों एवं प्रविधियों को प्रयोग में लाने का सिद्धान्त।

**बालकों को प्रेरित करने की यथोचित प्रविधियाँ**

कुछ प्रविधियाँ ऐसी है जिनका उपयोग कर शिक्षक बच्चों को प्रेरित कर सकते हैं-

विद्यार्थी में सीखने की आवश्यकता उत्पन्न करने के लिए शिक्षक को विशेष सूझबूझ एवं कौशल का उपयोग करना चाहिए ताकि छात्र पाठ को सीखने की तीव्र आवश्यकता को महसूस कर सकें और वे स्वयं ही कार्यमुखी होकर कौशल प्राप्त करने में लग जायें।

शिक्षक को छात्रों के आकांक्षा स्तर को उनकी क्षमता एवं पूर्व उपलब्धियों के आधार पर विकसित करने का सुझाव देना चाहिए, हम कभी-कभी देखते हैं कि छात्र अपनी आकांक्षा स्तर को अवास्तविक ढंग से काफी ऊँचा कर लेते है जिसे वे प्राप्त नहीं कर पाते और कुंठा एवं तनाव का शिकार होकर शिक्षा मंे अभिरूचि खो बैठते हैं ऐसे छात्रों पर शिक्षकों को विशेष ध्यान रखना चाहिए। पाठय विषय को मनोरंजन तथा छात्रों की क्षमता, अधिक्षमता एवं मनोवृत्ति के अनुकूल होना चाहिए।

शिक्षक को इस बात का प्रयास करना चाहिए, छात्र, शिक्षा एवं शिक्षण में अपनी अभिरूचि नहीं खोए इसके लिए उनकी अभिरूचियों ने अनुरूप पठन-पाठन का कार्यक्रम चलाना चाहिए।
शिक्षक को चाहिए कि वह उच्च शैक्षिक उपलब्धियों के लिए पुरस्कार की घोषणा करें ताकि छात्रों का मनोबल बढ़े व सीखने में अधिक रूचि हो।
शिक्षक को बहुत आवश्यक होने पर ही दंड जैसे हथकंडे का प्रयोग करना चाहिए।
छात्रों के लिए अन्य सहायक गतिविधियों की व्यवस्था करनी चाहिए इससे छात्रों के मानसिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है जो उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए आवश्यक है।
शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों के सांवेगिक स्तर पर भी ध्यान दे ताकि उनमें सुरक्षा का भाव उत्पन्न हो सके और वह शिक्षक के साथ सही ढंग से तादात्म्य स्थापित कर सकें।
शिक्षक को छात्रों के बीच स्वस्थ गतिविधियों का भाव उत्पन्न करना चाहिए ताकि विषय को सीखने में रूचि उत्पन्न हो सकें तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी ऊँचा उठ सकें।
शिक्षक को प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करते समय इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि छात्रों में तीव्र एवं कटु प्रतियोगिता की भावना न उत्पन्न हो जाए क्योंकि इसका प्रभाव सदा हानिकारक होता है।
शिक्षक को वैज्ञानिक विधियों द्वारा छात्रों की शैक्षिक प्रगति को मापना चाहिए तथा परिणाम का ज्ञान उन्हें देते रहना चाहिए।
शिक्षक द्वारा इस बात की कोशिश भी होनी चाहिए कि छात्रों को अपनी गलतियों से आगाह करा दिया जाए तथा उनके सुधार की दिशा में विशेष सुझाव दिए जाएं।
इन विधियों को ठीक ढंग से अपनाकर एक शिक्षक छात्रों को प्रेरित कर सकते हैं।

**निष्कर्ष**

उपर्युक्त विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिप्रेरणा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा से तात्पर्य किसी बुनियादी अभिप्रेरक से संचालित व्यवहारजन्य स्थिति से होता है, जिससे वशीभूत होकर व्यक्ति किसी समय विशेष पर अपनी किसी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु किसी विशेष प्रकार की लक्ष्य निर्देशित व्यवहार करने के लिए मजबूर रहता है।
अभिप्रेरणा को आन्तरिक व बाह्य अभिप्रेरणा में बाँटा जा सकता है। आन्तरिक अभिप्रेरणा में कार्य करने से आन्तरिक रूप से प्रसन्नता होता है बाह्य अभिप्रेरणा में पुरस्कार का लालच रहता है या डर के कारण वह कार्य करने को मजबूर रहता है अधिगम की कुंजी अभिप्रेरणा के हाथ में रहती है।
अभिप्रेरणा के द्वारा बाल व्यवहार में परिवर्तन, चरित्र निर्माण में सहायता, ध्यान केन्द्रित करने में सहायता, मानसिक विकास, रूचि का विकास, अनुशासन की भावना का विकास, सामाजिक गुणों का विकास, अधिक ज्ञान का अर्जन, तीव्र गति से ज्ञान का अर्जन होता है साथ ही व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार सीखने में प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है।
अभिप्रेरित करने के सिद्धान्तों के अलावा शिक्षक को विशेष कक्षा परिस्थितियों में विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के उपायों तथा तकनीकी पर भी ध्यान देना चाहिए। हम सभी को शिक्षक होने के नाते हर सम्भव प्रयास करते रहना चाहिए ताकि विद्यार्थी आन्तरिक व बाहरी रूप से अभिप्रेरित होकर सीखता रहे व जीवन पथ पर अग्रसर होते रहें।

**सन्दर्भ सूची**

1. *गुप्ता, प्रो. एस.पी. एवं गुप्ता, डॉ. अल्का, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ.508*
2. *माथुर, डॉ. एस.एस., शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.224*
3. *मंगल, एस.के., शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग प्रायवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृ.289*
4. *सिंह, अरूण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, हरियाणा, पृ.269*
5. *Mohan, Dr. G. Aruna, Educational Psychology, Neelkamal Publication, Hyderabad, p.213.*
6. *Mangal, S.K., Essentials of Educational Psychology, PHI Learning Private Limited, Delhi, p.241*
7. *https://hiwikipedia.org*
8. *https://ctetnotes.com*